

भारतीय ज्ञान परंपरा में दार्शनिक पहलू

डॉ. हरीश कुमार सिंह
रामस्वरूप ग्रामोद्योग परास्नातक महाविद्यालय, पुखरायां, कानपुर देहात

ABSTRACT

भारतीय ज्ञान परंपरा एक दीर्घकालीन, बहुआयामी और गहन वैचारिक धरोहर है, जिसमें दर्शनशास्त्र का एक केंद्रीय और सशक्त स्थान रहा है। यह परंपरा न केवल आध्यात्मिक और धार्मिक चिंतन में समृद्ध रही है, बल्कि तर्क, अनुभव, नैतिकता और मानव जीवन की जटिल समस्याओं के समाधान हेतु विविध दार्शनिक दृष्टिकोणों को भी जन्म देती है। वेद, उपनिषद, स्मृति, पुराण, और शास्त्रों से लेकर बौद्ध, जैन, चार्वाक, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत तक अनेक मतों और उपमतों ने सत्य, आत्मा, ब्रह्म, मोक्ष, कर्म, पुनर्जन्म, इंद्रियज्ञान, तर्क और मुक्ति जैसे मूल प्रश्नों पर गंभीर विमर्श प्रस्तुत किया है।यह परंपरा एक ओर जहाँ आत्मा की अमरता, ब्रह्म की सार्वभौमिकता और मोक्ष की प्राप्ति की खोज करती है, वहीं दूसरी ओर चार्वाक जैसे भौतिकवादी मत भी प्रस्तुत करती है जो प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानते हैं। जैन दर्शन का अनेकांतवाद और अहिंसा, तथा बौद्ध दर्शन की चार आर्य सत्यों एवं अष्टांगिक मार्ग जैसी अवधारणाएँ न केवल भारतीय चिन्तन को समृद्ध करती हैं, बल्कि एक सार्वभौमिक नैतिक विमर्श भी निर्मित करती हैं। भारतीय दर्शन का यह समावेशी, बहुविध और संवादशील स्वरूप उसे वैश्विक बौद्धिक परंपरा में विशिष्ट स्थान प्रदान करता है।

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम और समृद्धतम परंपराओं में से एक रही है। यह परंपरा केवल ज्ञान–संग्रह तक सीमित नहीं रही, बल्कि आत्मा, ब्रह्म, मोक्ष, धर्म, सत्य और चेतना जैसे गूढ़ और मौलिक विषयों पर गहन चिंतन की वाहक रही है। भारतीय दार्शनिक परंपरा में जीवन, जगत और ईश्वर के रहस्यों की व्याख्या केवल तर्क से ही नहीं, अपितु अनुभव और ध्यान की विधियों से भी की गई है। यह परंपरा विविध दर्शनोंकृजैसे वेदांत, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, बौद्ध और जैनकृके माध्यम से अपना विकास करती रही है। भारतीय दर्शन का मूल उद्देश्य केवल बाह्य जगत की जानकारी देना नहीं है, बल्कि आत्मा की मुक्ति (मोक्ष) का मार्ग प्रशस्त करना है। ज्ञान का अंतिम लक्ष्य आत्मा और ब्रह्म की एकता की अनुभूति है।भारतीय दार्शनिक परंपरा में श्रुति, स्मृति, अनुभव और तर्ककृचारों को ज्ञान के साधन के रूप में मान्यता प्राप्त है। यहाँ परंपरा और विवेक का अद्भुत संतुलन देखा जा सकता है।भारतीय ज्ञान परंपरा में अनेक मत–मतांतरों का सह–अस्तित्व है। एक ही सत्य के विभिन्न दृष्टिकोण ों को सम्मान देने की परंपरा यहाँ गहराई से विद्यमान है।

वेद, उपनिषद, और शास्त्र , भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपरा के मुख्य स्तंभ माने जाते हैं। इनका महत्व न केवल धार्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण से है, बल्कि समाज, शिक्षा, और संस्कृति में भी इनका गहरा प्रभाव रहा है। यहाँ हम, इन तीनों के महत्व को विस्तार से समझेंगे– वेद भारतीय धार्मिक और दार्शनिक ज्ञान के प्राचीनतम पुस्तक हैं जो अपौरूषेय है ये पुस्तक वेदवाणी, भगवान से प्राप्त ज्ञान के रूप में माने जाते हैं और वेदों का अध्ययन मानव जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाती है। चार प्रकार के वेद है, ऋग्वेद का प्रमुख विषय प्रकृति, देवता और ब्रह्मा के विभिन्न रूपों का गुणगान करना है। यजुर्वेद मुख्य रूप से यज्ञों, बलि और पूजा विधियों से संबंधित है। सामवेद में संगीत, गायन और संगीत के वैज्ञानिक सिद्धांतों का विस्तृत विवरण है। अथर्ववेद में जादू, तंत्र, चिकित्सा, और समाज के भौतिक पहलुओं से संबंधित ज्ञान है। वेद हिंदू धर्म की बुनियादी संरचना हैं। ये धर्म के सिद्धांतों, अनुष्ठानों और भगवान के साथ संबंध को समझने में मदद करते हैं। वेदों में जीवन, अस्तित्व, आत्मा, और ब्रह्मा के विषय में गहरी सोच और दार्शनिक विचार मिलते हैं। ये जीवन के उद्देश्य को समझने का मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। वेदों ने समाज में विभिन्न कर्तव्यों, संस्कारों और नैतिकता के सिद्धांतों को स्थापित किया। यह भारतीय संस्कृति और समाज के विकास के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण रहे हैं। उपनिषद वेदों के अंतिम भाग हैं, इन्हें "वेदांत" (वेद का अंतिम भाग) भी कहा जाता है। उपनिषदों में वेदों के विचारों और सिद्ध ांतों का सारांश और गहरी व्याख्या दी गई है। उपनिषदो का उद्देश्य आत्मा, ब्रह्मा (ईश्वर) और संसार के संबंध को समझना है उपनिषदों में ब्रह्म और आत्मा के एकत्व को माना गया है। ब्रह्मा के साथ आत्मा की एकता को "तत्त्वमसि" (तू वही है) के रूप में व्यक्त किया गया है।यहाँ आत्म–ज्ञान प्राप्ति के लिए योग और ध्यान का महत्व बताया गया है। उपनिषदों में जीवन के उद्देश्य को आत्मा की मुक्ति (मोक्ष) के रूप में देखा गया है। उपनिषदों ने जीवन, मृत्यु, ब्रह्मा, और आत्मा के बारे में गहरी दार्शनिक और आंतरिक दृष्टि दी है। ये जीवन के अंतिम सत्य और उद्देश्य को समझाने के प्रयास हैं। उपनिषदों का प्रमुख उद्देश्य आत्मा का ज्ञान और ब्रह्मा के साथ एकता है, जो व्यक्ति को मुक्ति (मोक्ष) की दिशा में मार्गदर्शन करता है। उपनिषदों में समाहित ज्ञान जीवन के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण और विज्ञान के बुनियादी सिद्धांतों में संबंध देखा जा सकता है। भारतीय संस्कृति में शास्त्र का आशय उस ज्ञान से है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं को निर्धारित करने वाले धार्मिक, सामाजिक और नैतिक नियमों का पालन करने के लिए निर्देश प्रदान करते हैं ये पुस्तक वेदों और उपनिषदों से बाहर के हैं और विभिन्न विषयों जैसे कानून, नीति, राजनीति, धर्म, और समाज

के बारे में विस्तार से चर्चा करते हैं,शास्त्रों के अनेक प्रकार है जैसे धर्मशास्त्र– जिसमे मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, नारद स्मृति आदि, जो समाज के धर्म, न्याय, और नैतिकता से संबंधित होते हैं। दूसरा अर्थशास्त्र,जो कौटिल्य का है जो राजनीति, शासन और समाज के आर्थिक दृष्टिकोण से जुड़ा है।कर्मशास्त्र–यह शास्त्र जीवन के कर्तव्यों और कर्मों को निर्धारित करता है। जैसे भगवद गीता में कर्मयोग का सिद्धांत है। न्यायशास्त्र– यह शास्त्र न्याय और तर्क के सिद्धांतों पर आधारित है, जो न्यायिक व्यवस्था को समझने में मदद करता है। शास्त्रों ने समाज को एक निश्चित दिशा और धार्मिक अनुशासन प्रदान किया। जैसे, मनुस्मृति ने सामाजिक कर्तव्यों और धार्मिक आस्थाओं का निर्धारण किया अर्थशास्त्र जैसे ग्रंथों ने प्रशासन, राजनीति और शासन की कला में मार्गदर्शन दिया। शास्त्रों ने व्यक्ति और समाज के लिए नैतिकता और आचार संहिता का निर्धारण किया। ये जीवन के सिद्धांतों को प्रकट करने वाले मार्गदर्शक रहे हैं। वेद, उपनिषद और शास्त्र भारतीय ज्ञान परंपरा के अभिन्न अंग हैं और इनका महत्व जीवन के प्रत्येक पहलू में गहराई से जुड़ा हुआ है। वेदों ने धार्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक ज्ञान का आधार तैयार किया, उपनिषदों ने आत्मज्ञान और ब्रह्मा के साथ एकता की परिभाषा दी, जबकि शास्त्रों ने समाज, धर्म, राजनीति और नैतिकता के नियमों को स्थापित किया। इन तीनों के अध्ययन से जीवन के समग्र उद्देश्य को समझने, समाज में सामंजस्य बनाए रखने और व्यक्ति के आंतरिक विकास के लिए मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में चार्वाक, जैन और बौद्ध दर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण है–चार्वाक दर्शन को लोकायत या भौतिकवाद के नाम से जाना जाता है। यह भारतीय दर्शन में एक ऐसी धारा है जो वैदिक परंपरा की आलोचना के रूप में उभरती है। इसकी प्राचीनतम रूपरेखा बृहस्पति नामक विचारक से जुड़ी मानी जाती है। चार्वाक दर्शन आत्मा, पुनर्जन्म, स्वर्ग–नरक और यज्ञादि धार्मिक कृत्यों को नकारता है और केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को ही ज्ञान का साधन मानता है। अनुमान (अनुमान) और श्रुति (श्रुतिपरंपरा) को यह अमान्य मानता है।चार्वाक के अनुसार आत्मा शरीर से अलग कोई सत्ता नहीं है; चेतना केवल शरीर का गुण है, और शरीर के नष्ट होते ही चेतना भी समाप्त हो जाती है। इसलिए यह मोक्ष, आत्मा की अमरता, और पुनर्जन्म जैसे सिद्धांतों को निरर्थक मानता है। उसके अनुसार जीवन का मुख्य उद्देश्य सुख की प्राप्ति है, और यज्ञ, तर्पण, आदि धार्मिक कृत्य केवल भ्रम हैं क्योंकि इनके प्रत्यक्ष अनुभव में कोई परिणाम दिखाई नहीं देता।चार्वाक दर्शन की नैतिकता सांसारिक सुख और यथार्थवाद से जुड़ी है। यह जीवन को प्रत्यक्ष और अनुभवसिद्ध रूप में देखने की प्रेरणा देता है। "ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत" (कर्ज लेकर भी घी पीना चाहिए) जैसे कथन इसकी लोकायत प्रवृत्ति को प्रकट करते हैं। यद्यपि यह वाक्य भोगवादी प्रतीत होता है, परंतु इसका मर्म यह है कि जीवन को प्रत्यक्ष और यथार्थ अनुभव के आधार पर जिया जाए।चार्वाक की मूल रचनाएँ अब उपलब्ध नहीं हैं, परंतु अन्य दर्शनों द्वारा की गई आलोचनाओं से इसके विचारों की पुनर्रचना संभव हुई है। चार्वाक भारतीय बौद्धिक परंपरा में तर्क, असहमति और वैचारिक स्वतंत्रता का सशक्त उदाहरण है।

जैन धर्म का प्रारंभ ऋषभदेव से माना जाता है, किन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से इसके संस्थापक के रूप में भगवान महावीर (ईसा पूर्व 6वीं शताब्दी) को प्रमुखता प्राप्त है। वे इसके 24वें तीर्थंकर माने जाते हैं। जैन दर्शन एक ऐसी परंपरा है जिसमें आत्मा की स्वतंत्रता, कर्म का सिद्धांत, और अहिंसा का सर्वोपरि मूल्य स्थापित किया गया।इस दर्शन के अनुसार संपूर्ण जगत दो तत्वों से बना है दृ जीव (चेतन) और अजीव (अचेतन)। जीवों की मुक्ति उनके ऊपर संचित कर्मों से संभव है। प्रत्येक विचार, वाणी और क्रिया आत्मा पर कर्म के रूप में चिपकती है, जिससे आत्मा का बंधन होता है। मोक्ष के लिए इन कर्मों का क्षय आवश्यक है, जो संयम, तप और ज्ञान द्वारा संभव है।जैन धर्म में अहिंसा को सर्वाधिक महत्व दिया गया है दृ विचार, वाणी और कृत्य से किसी भी जीव को क्षति पहुँचाना पाप माना गया है। जैन दर्शन में अनेकांतवाद की संकल्पना अत्यंत विशिष्ट है, जिसके अनुसार सत्य को अनेक दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है दृ यही इसकी बौद्धिक सहिष्णुता और बहुवचनात्मकता को दर्शाता है। "स्यात् अस्ति, स्यात् नास्ति" जैसे प्रयोग इसके दृष्टिकोण की गहराई को प्रकट करते हैं।इस धर्म में पंच महाव्रत दृ अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह दृ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। जैनाचार्य समाज को आत्मानुशासन, संयम और आंतरिक साधना की ओर प्रेरित करते हैं। यह धर्म वैदिक कर्मकांडों से भिन्न, आत्मशुद्धि पर बल देता है। जैन धर्म ने भारतीय समाज में नैतिकता, अहिंसा और सहिष्णुता की गहरी नींव डाली।

गौतम बुद्ध (ईसा पूर्व 6वीं शताब्दी) ने बौद्ध धर्म की स्थापना की। उन्होंने कठोर तप, ध्यान और आत्मचिंतन द्वारा बोधि (ज्ञान) प्राप्त किया और संसार को दुःखों से मुक्ति का मार्ग बताया। उन्होंने चार आर्य सत्यों की उद्घोषणा की, दुःख – जीवन दुःखमय है। दुःखसमुदय दृ दुःख का कारण तृष्णा है। दुःखनिरोध – तृष्णा की समाप्ति से दुःख की निवृत्ति संभव है। दुःखनिरोधमार्ग – अष्टांगिक मार्ग से मोक्ष की प्राप्ति संभव है। बुद्ध ने जिस अष्टांगिक मार्ग का निर्देश दिया, वह हैः सम्यक दृष्टि – यथार्थ को देखना,सम्यक संकल्प – श्रेष्ठ उद्देश्य, सम्यक वाक् – सत्य और अहिंसात्मक वाणी, सम्यक कर्म – नैतिक आचरण, सम्यक आजीविका – शुद्ध और अहिंसक जीविका,सम्यक प्रयास – बुराइयों को हटाने का प्रयत्न,सम्यक स्मृति – सतत जागरूकता,सम्यक समाधि – ध्यान और अंतर्मुखता, अबौद्ध दर्शन में आत्मा की स्वतंत्र सत्ता को अस्वीकार करते हुए अनात्मवाद की स्थापना की गई है, जिसमें व्यक्ति केवल पंचस्कंधों (रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान) का योग है। इसके अनुसार मुक्ति निर्वाण है – तृष्णा और अहंकार की समाप्ति। बौद्ध धर्म ने तर्क, करुणा, और व्यावहारिक नैतिकता पर बल देते हुए एक व्यापक समाज सुधार आंदोलन को जन्म दिया। इसने जाति–पाँति, यज्ञ, कर्मकांड, और पाखंड का विरोध कर 'आत्मदीपोभव' का उदघोष किया। बुद्ध के उपदेश समानता, आत्मशुद्धि और मध्य मार्ग को प्रतिष्ठित करते हैं।

चार्वाक, जैन और बौद्ध दर्शन दृ तीनों ही वैदिक परंपरा से भिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं, लेकिन प्रत्येक ने भारतीय ज्ञान परंपरा को एक समृद्ध, तर्कशील और बहुसांस्कृतिक विमर्श प्रदान किया। चार्वाक ने तर्क और यथार्थवाद, जैन ने अहिंसा और अनेकांतवाद, और बौद्ध ने करुणा और मध्य मार्ग के माध्यम से भारतीय बौद्धिकता को व्यापकता और गहराई प्रदान की। ये परंपराएँ आज भी विचार, संवाद और वैचारिक स्वतंत्रता की प्रेरणा स्रोत हैं।

संदर्भ सूची

1. दासगुप्त, सूर्यकान्त. भारतीय दर्शन का इतिहास, भाग 1–5, मोटिलाल बनारसीदास प्रकाशन, वाराणसी।
2. राधाकृष्णन, डॉ. एस. भारतीय दर्शन (Indian Philosophy), खंड 1 एवं 2, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. चटर्जी, सत्येन्द्रनाथ एवं दत्त, द्वारिकानाथ. Introduction to Indian Philosophy, यूनिवर्सल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
4. शर्मा, चन्द्रधर. भारतीय दर्शनः एक परिचय, मोटिलाल बनारसीदास, दिल्ली।
5. उपाध्याय, रामचन्द्र. भारतीय दर्शन की रूपरेखा, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली।
6. महादेवन, टी.एम.पी. Outline of Hinduism, चक्रवर्ती एंड कंपनी, मद्रास।
7. मुनि, श्रीनिवास. बौद्ध दर्शन और उसका विकास, नालंदा पुस्तकालय, नालंदा।
8. जैन, जगदीशचन्द्र. जैन दर्शन और संस्कृति, भारतीय विद्या भवन, मुंबई।
9. भट्टाचार्य, विद्याभूषण. भारतीय दर्शन का इतिहास, कलकत्ता यूनिवर्सिटी प्रेस।

10- Patanjali- Yoga Sutras of Patanjali, अनुवादः स्वामी सत्यनन्द सरस्वती, बिहार योग भारती।

11- Chakravarthi, S- Hinduism: A Philosophical Study, Bharatiya Vidya Bhavan, Mumbai-

12- Mohanty, J-N- Classical Indian Philosophy, OÛford University Press, New Delhi-

13. उपनिषद संग्रह, संपादकः स्वामी माधवानन्द, अद्वैत आश्रम, कोलकाता।
14. भगवद्गीता दृ श्रीमद्भगवद्गीता भाष्य सहित, आचार्य शंकर, गीता प्रेस, गोरखपुर।